गीतांजलि

गीतांजलि

जगदीश प्रसाद मण्डल

ISBN : 978-93-80538-72-3

दाम : २०० रू. मात्र

पहिल संस्करण : २०१३

गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी

(बिहार)

पिन- ८४७४१०

मोबाइल- ९९३१६५४७४२

श्रुति प्रकाशन :

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website : http://www.shruti-publication.com

e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

मुद्रक: अजय आर्टस्, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२

अक्षर-संयोजक: श्री उमेश मण्डल

डिस्ट्रिब्यूटर:

पल्लवी डिस्ट्रिब्यूटर, वार्ड न. ६, निर्मली (सुपौल), मो. ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

Gitanjali : Anthology of Maithili Geet by Jagdish Prasad Mandal.

प्रोफेसर उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

कैँ

समरपित...

परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल "बाल साहित्य विदेह सम्मान" २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३)

विहनि कथा संग्रह : (१) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३), (२) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह) (२०१० पहिल संस्करण, २०१३ दोसर संस्करण)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३)
दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३)
कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३)
गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३)

एकसत्तरि-

१. हाल-बेहाल 0
२. शीला शील 0
३. रंग सियाही 0
४. दिन घटतै 0
५. उठिते आगि 0
६. छप्पर किए 0
७. गामसँ किए 0
८. बेढब रूप 0
९. संग जिनगी 0
१०. सबहक जिनगी 0
११. सुन मैया गे 0
१२. पकड़ि तान 0
१३. भोरे कनी 0
१४. पकड़ि पग
१५. संच-मंच रहए
१६. ओस बनि
१७. बाढ़िमे सभ
१८. हरा-ढरा
१९. मीत यौ
२०. अजीब-अजीब
२१. अपने ताले
२२. पग-पग
२३. यार यौ
२४. निरमोही बौआ
२५. अपना गतिए
२६. मीत यौ
२७. हे बहिना
२८. हे बहिना
२९. सुक्खक अतृप्त
३०. नढ़ड़ा हेल
३१. अहीं कहू
३२. चलू उचितपुर
३३. कानि कलपि
३४. बुधिये बाट
३५. जुग-जुग
३६. घात लगौने
३७. देहमे नमहर
३८. जिनगीमे जे
३९. हे बहिना केना
४०. हे आशुतोष
४१. मनक फूल
४२. फूल मनक
४३. बेकाल-काल
४४. जेहन जेकर
४५. समए-साल
४६. संग मान-समान
४७. जेहने शक्तिक
४८. खेल खेलौ
४९. प्रेमी पिया
५०. बिसरि गेल
५१. आबो कनी

१. हाल-बेहाल...

हाल-बेहाल देखि रंग राही
कुशल फूल सजबैत रहै छै।
चढ़िते रंग नील नीलिया
मधुर रस पान करैत रहै छै।
हाल-बेहाल देखि रंग राही
कुशल फूल...।

डगडगाएल हाल पाबि उसरक
फूल उस्सर सिरजैत रहै छै।
घूरि ताकि नै भरमए भौरा
दिवा रसराज कहबैत रहै छै।
हाल-बेहाल देखि रंग राही
कुशल फूल...।

आसनसँ सिंघासन बनि-बनि
चटाइ नाओं धड़बैत रहै छै
पूजा आसन बनि सदएसँ
लोक सुर सजबैत रहै छै।
हाल-बेहाल देखि रंग राही
कुशल फूल...।

उठिते अंजलि चढ़िते मंजलि
मंगल गीत गबैत रहै छै।
गीता-गीत सदएसँ होइतो
हाल-बेहाल पबैत रहै छै।
हाल-बेहाल पबैत रहै छै।
कुशल फूल...।

२. शीला शील...

शीला शील देखि-देखि
हंस कानि कहैत एलैए।
एक शील श्रृंग चढ़ि-चढ़ि
दोसर श्रृंगार बनैत एलैए।
शीला शील देखि-देखि
हंस कानि...।

चढ़ि श्रृंग गढ़ि धनुखी
अकास सिर बेधैत एलैए।
हंसराज राजहंस रमकि
सिर श्रृंगार सजैत एलैए।
शीला शील देखि-देखि
हंस कानि...।

शील सुशील सुर बदलि
तीरमिरछि देखैत एलैए
चिरमिराइत चिड़ै बूझि
सुशील-कुशील बनैत एलैए।
शीला शील देखि-देखि
हंस कानि...।

३. रंग सियाही

रंग सियाही रोशनाइ बनि
रेहे-रेह सियाह घोड़ाएल छै।
भाव-अभाव कुभाव बनि-बनि
गीत प्रेम लिखाएल रहै छै।
रंग सियाही रोशनाइ बनि
रेहे-रेह...।

गहराएल गहन पून चान सन
इजोत-अन्हार बनहाएल छै।
तहिना ने दिनो-दीनानाथ
भक-इजोत पाबि भखियाएल छै।
भक-इजोत पाबि भखियाएल छै।
रंग सियाही रोशनाइ बनि-बनि
रेहे-रेह...।

कहि रोशन टघरि सियाह
लेख कर्म लिखबैत रहै छै।
तिले-तिल तिलकि जअ जहिना
हवन कुंड जड़जड़बैत रहै छै।
हवन कुंड जड़जड़बैत रहै छै।
रंग सियाही रोशनाइ बनि
रेहे-रेह...।

भाव-अभाव कुभाव बनि-बनि
गीत प्रेम लिखाइत रहै छै।
रंग सियाही रोशनाइ बनि-बनि
रेहे-रेह...।

४. दिन घटतै...

दिन घटतै कि राति यौ भैया
मौसम मुस्की दइत छै
साले दिनक समैए कते
रंग लीलाक बदलैत छै
दिन घटतै कि राति यौ भैया
मौसम...।

अपन-अपन सनेस बाँटि सभ
सुरभित वायु परसैत छै
खसल-पड़लमे जान फूकि
थाम्हि-थाम्हि उठबैत छै
दिन घटतै आकि राति यौ भैया
मौसम...।

समए ने ककरो संग पुड़ैए
ने ककरो संग दइत छै
अपन-अपन सभ समेटि-समेटि
सिरे-सिर उठबैत छै
दिन घटतै कि राति यौ भैया
मौसम...।

५. उठिते आगि...

उठिते आगि तनकि मन
मुक्का छाती मारि कहै छै,
ताल-ताल मिला बेताल
संग बाँहि आवाज भरै छै।
उठिते आगि तनकि मन
मुक्का...।

चढ़िते कातिक गाछी-बिरछी
गाम-गाम अखाड़ अबै छै,
जाड़-हाड़ संग मिलि दुनू
जड़ियाएल जाल तोड़ैत रहै छै।
उठिते आगि तनकि मन
मुक्का...।

सुषुम तेल तरहथ्थी जहिना
बच्चा सिर धड़ैत रहै छै
धरिते तेल पकड़ि केश
अगियाइत आगि पाबैत रहै छै।
उठिते आगि तनकि मन,
मुक्का छाती मारि कहै छै।
ताल-ताल मिला बेताल
संग बाँहि आवाज भरै छै।
मुक्का...।

६. छप्पर किए...

छानि किए कुचड़ै छह हे कौआ
छानिपर किए बैसल छह।
लग-आबि समाद सुनाबह
नहिराक सोखरि गाबि सुनाबह
भैया-भौजीक हाल-चाल संग
गाम-समाजक हाल सुनाबह।
छानि किए कुचड़ै छह हे कौआ
छानिपर...।

दादीक-दरदक हाल सुनाबह
बाबूक बात बिसरिहह नै
रेखिया-सुगिया पढ़ै छै कि नै
माइयक मन बिसरिहक नै
छानि किए कुचड़ै छह हे कौआ
छानिपर...।

७. गामसँ किए...

गामसँ किए डरै छी
भाय यौ, गामसँ किए डरै छी।
सदिकाल गामक चर्च करै छी
राति-दिन सोहरो गबै छी
तखन किए भगै छी
गामसँ किए डरै छी
भाय यौ...।

बाप-पुरुखाक पुरुषार्थ गाबि-गाबि
छाती-तानि हामी भरै छी
नानी-दादीक खिस्सा-पिहानी
सुना-सुना मोहैत रहै छी
गामसँ किए डरै छी
भाय यौ...।

जइ मातृभूमि ममतासँ
हृदए गंग बहबै छी
गामे-गाम पसरल छै मिथिला
गामेसँ किए मुरुछै छी,
गामसँ किए मुरूछल छी
गामसँ किए डरै छी
भाय यौ...।

गाम-धाम काम मंदिर
धाम तीर्थ कहबै छी।
तीर्थाटनसँ घूमि-घूमि
गामेमे बुतबै छी।
एना किए करै छी?
मीत यौ, गामसँ किए डरै छी।

८. बेढब रूप...

बेढब रूप गढ़ि-मढ़ि जिनगी
बेढब गीत गबै छै।
बेढब कुचालि सुचालि पकड़ि
बेढब पाठ पढ़ै छै।
बेढब गीत गबै छी
भाय यौ, बेढब...।

जीत जिनगी ठाढ़ छै जंगल
मंगल आस भरै छै।
कहि सुमंगल कुमंगल बनि
मंगल दंभ भरै छै।
भाय यौ, दंभ भरै छै।
बेढब गीत गबै छै।

जहिना कार्बन कागज चढ़ि
कागज कार्बन कहबै छै।
तहिना कार्बन चढ़ि जिनगी
अन्हार पक्ष कहबै छै।
भाय यौ, अन्हार पक्ष कहबै छै।
बेढब गीत गबै छै।

दोहरी पक्ष जिनगी चलै छै
अन्हार-इजोत कहबै छै।
दुख सागर बीच सुखसागर
अमवसिया पूर्णिमा कहबै छै।
भाय यौ, अमवसिया पूर्णिमा कहबै छै।
बेढब गीत गबै छै।

१. संग जिनगी...

संग जिनगी मन पान करै छै
समए संग रसपान करै छै।
संग जिनगी...।

ठेँस-ठेँसिया टूटि-फुटि जिनगी
हँसी-खुशी मुखपान करै छै
गुण-अवगुण भेद बिनु बुझने
समए संग रसपान करै छै।
जिनगी संग मन पान करै छै।
संग जिनगी...।

झाड़-कुझाड़ केतौ नचै छै
केतौ ताड़ गाछ मलड़ै छै।
ठिठकि-ठिठकि ठमकि जिनगी
मति-मति सिर्जमान करै छै।
संग जिनगी...।

अपन जिनगी अपने सन गढ़ि
दुखी-सुखी मुसकान भरै छै।
मोड़ि-मुँह उलटि-पलटि देखि
सुसकारी भरि-भरि चलै छै
समए संग विषपान करै छै।

मान-अपमान भेद भूलि
संग मिलि सुरधाम चलै छै।
घाट-बाट अटकि-मटकि
हारि जीत स्नान करै छै।
हारि जीत स्नान करै छै।
संग जिनगी...।

१०. सबहक जिनगी...

सबहक जिनगी गीत गबै छै
गीतक संग सुख-दुख कहै छै।
सबहक...।

सुर-तान, राग अलपि-अलपि
जिनगीक मुसकान भरै छै
सबहक...।

घड़ी-पहर रूप, बदलि भास
समए-संग संगीत रचै छै
सबहक...।

हँसि-विहुँसि सुर-तान तानि
विषम-सम बनबैत चलै छै
सबहक...।

अपन-अपन हक-हिस्सा जहिना
बीच बसुधा चान सुर्ज कहै छै
सबहक...।

चलि संग संगतिया रचि-रचि
काज-करतब सिखबैत चलै छै।
काज-करतब सिखबैत चलै छै
सबहक... ।

११. सुन मैया गे...

सुन मैया गे, सुनू बाबू यौ
सुधि संतान सहरल केना
सुधि संतान सहरलै किए?
कि दोख देखि दृग दूषित भेल
रहितो गुरु कहलौं ने किए?
सुधि संतान सहरलै किए?
सुधि संतान सहरलै केना?
सुन मैया...।

अधिया मानि जेकरा कहलिऐ
आधा मानि देलिऐ ने किए?
सुधि परिवार बिसरलौं किए
सुधि संतान...।

दुनू मिलि घर-दुआर सजेलौं
कुल-गोत्र दुनू संग मिलेलौं।
दोहरी रीति बनेलौं किए?
सुनू बाबू यौ, सुनू भैया यौ
सुधि परिवार बिसरलौं किए?
सुधि संतान...।

१२. पकड़ि तान...

पकड़ि तान सभक जिनगी
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
तीत-मीठ गढ़ि-गढ़ि, मढ़ि-मढ़ि
दिन-राति कहैत चलै छै
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
पकड़ि...।

बदलि मीठ बिगड़ि-बिगड़ि
क्रोधे करुआए लगै छै।
कुदैत क्रोध तुरुचि तुष्टि
तीत-मीठ बनबए लगै छै
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
पकड़ि...।

छनि-छनि, छन-छन पल-पल
राति-दिन गढ़ए लगै छै।
साँझ-भोर घड़ी-घंट बजा
कुथनी-कहनी कहए लगै छै
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
पकड़ि...।

शंख-नाद सुर मिला-मिला
नादशंख दिअ लगै छै।
कौरब-पाण्डव मध्य कृष्ण
महाभारत रचए लगै छै।
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
पकड़ि...।

१३. भोरे कनी...

भोरे कनी जगा देब,
भाय यौ, भोरे कनी जगा देब।
जुग-जुगसँ मोट-गाढ़ नीन
सिरमा तरक सभ किछु लेलक।
आबो कनी जगा देब,
भाय यौ, आबो कनी जगा देब।
भोरे...।

इन्दिरा अवासमे नाओं लिखेतै
सिमटी-ईटा केर घरो बनतै।
हथिया झटकी किछु ने करतै
भोरहरबे कनी जगा देब
भाय यौ, भोरहरबे कनी जगा देब।
भोरे...।

सात कोस पएरे जए पड़तै
ब्लौकेमे शिविरो लगतै,
नाओं ओतै सेहो लिखेतै
भाय यौ, भोरे कनी जगा देब।
भोरे...।

१४. पकड़ि पग...

पकड़ि पग पएरे-पएरे
पग-पग पथ पकड़ैत चलू।
पकड़ि प्रेम पहुँची पकड़ि
संग जिनगिक चलैत चलू।
संग जिनगिक चलैत चलू।
पकड़ि...।

मोटरी-चोटरीक आशा कत्ते
हल्लुक जान बनबैत चलू
पथ अबिते-अबैत
गुरु स्मरण करैत चलू।
गुरु स्मरण करैत चलू।
पकड़ि...।

जागल-सूतल धार बहै छै
जिन्दा मुरदा नाओं धड़ै छै
पथ-बना बीच धरती
जिनगीक गीत गबैत चलू।
जिनगीक गीत गबैत चलू।
पकड़ि...।

१५. संच-मंच रहए...

संच-मंच रहए कहाँ दइए
यार यौ, संचमंच रहए कहाँ दइए
मकड़ी फड़ खुआ-खुआ
टीक पकड़ि खिंचैत रहैए
संच-मंच रहए कहाँ दइए।
भजार यौ...।

चिड़चिड़ी छीट-छीट कखनो
ओझरी टीक लगबैए।
पोझरी पकड़ि-पकड़ि
खेल नाच लगबैए।
यार यौ, संच-मंच रहए कहाँ दइए।
भजार यौ...।

कहियो रंग कहियो कादो
सभपर सभ फेकैए।
रंग-सियाही बदलि-बदलि
आँखि दुइर करैए।
यार यौ, संच-मंच रहए कहाँ दइए।
भजार यौ...।

१६. ओस बनि...

ओस बनि आंसू पकड़ि
धार खून बहबैत एलैए।
प्रेम सिक्त प्रेमाश्रु पकड़ि
देह बेमाए कहबैत एलैए।
देह बेमाए कहबैत एलैए।
ओस बनि...।

हाथक हस्ति पकड़ि फाड़ि
रूप बेमाए धड़ैत एलैए।
बाँहि पकड़ि-पकड़ि हाथ
पएर पकड़ि कहैत एलैए।
पएर पकड़ि कहैत एलैए।
ओस बनि...।

आंगुर पकड़ि पकड़ि छीनि
पएर सिर चढ़बैत एलैए।
हस्ति हाथ मेटा-मेटा
नाम पएर जपैत एलैए।
नाम पएर जपैत एलैए।
ओस बनि...।

१७. बाढ़िमे सभ...

बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल,
मीत यौ, बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल।

मुँह-दुआरि परदा दहा गेल
दहा गेल सभ कुटुम-परिवार
हित-अपेछित सेहो भसिया गेल
भसि गेल सभ आचार-विचार।
भसि गेल सभ आचार-विचार।
बाढ़िमे...।

मीत यौ, जिनगीक संग जिनगी हरा गेल।
गुल्ली डन्टा खेल दहा गेल
दहा गेल दुआर दुआरधार
चिन्ह पहचिन्ह सेहो दहा गेल
कखनी घुमतै दुआर-दुआरधार।
कखनी घुमतै दुआर-दुआरधार।
बाढ़िमे...।

कानि कलपि केकरा के कहबै
अपने बेथे सभ बेथाएल।
सुनत केकर के दुख नचारी
अपने मनमे सभ बौड़ाएल।

अपने मनमे सभ बौड़ाएल।

बाढ़िमे... ।

१८. हरा-ढरा...

हरा-ढरा ढेरियाएल ढेरि
भोर-साँझ भुक्कैत रहै छी।
हरा-ढरा ढेरियाएल ढेरि।
भोर-साँझ...।

जइ सिरडीह नढ़िया भूकैत
राति-दिन गबियाइत रहै छी।
हरा-ढरा ढेरियाएल ढेरि।
भोर-साँझ...।

तान मारि कियो, कियो मारि ताइन
छिनकि-छिनकि छिड़ियाइत चलै छी।
हरा-ढरा ढेरियाएल ढेरि।
भोर-साँझ...।

जोतल दौन कराम बीच
खेरहा-कुरथा दौन करै छी।
हरा-ढरा ढेरियाएल ढेरि।
भोर-साँझ...।

रसिक रसिया रस रचै छी
रसिक रसिया रस रचै छी।
हरा-ढरा ढेरियाएल ढेरि।
भोर-साँझ...।

१९. मीत यौ...

मीत यौ हे यौ मीत
गहबर बीच गुहारि करै छी।

दिशा चारू फेकि फूल
शंख अकास फूकैत रहै छी
शंख अकास...।
मीत यौ, गहबर बीच गुहारि करै छी।

कूथि-कूथि सर सिरजि
व्यास बनि भगवत रचै छी
व्यास बनि...।
मीत यौ, हे यौ मीत
गहबर बीच गुहारि करै छी।

फूल एक अकास फेकि
दोसर गंगा लाभ करै छी
सखर-माँझ भेद नै बूझि
थरथराइत हाथ-पएर मरै छी
मीत यौ, हे यौ मीत
कुथनी कूथि मरैत रहै छी।
गहबर...।

२०. अजीब-अजीब...

अजीब-अजीब खेल चलै छै
खाली-खाली मन भरै छै।
अजीब...।

राति-दिन कियो, कियो दिन-राति
एकबट-दुबट करैत रहै छै
अजीब-अजीब खेल चलै छै।
खाली-खाली मन भरै छै।

रातिक दिन कियो दिनक राति
विहुँसि-विहुँसि बढ़ैत रहै छै।
अजीब-अजीब खेल चलै छै।
खाली-खाली मन भरै छै।

काहू मगन कोइ, कोइ काहू मगन
रमि-रमि रमता बनैत रहै छै।
अजीब-अजीब खेल चलै छै
खाली-खाली मन भरै छै।

२१. अपने ताले...

अपने ताले नाच करै छै
गाले अपने गीत गबै छै।
अपने ताले...।

अपने हाल बेहाल भेल छै
अपने चालि चिचीआ चलै छै
अपने ताले नाच करै छै
गाले अपने गीत गबै छै।

चलैत जिनगीक चक-चिकमे
मुनि आँखि भकुआइत चलै छै।
छिछैल-छिछैल बटिया-घटिया
दिनोदिन हराइत चलै छै।
अपने ताले नाच करै छै
गाल अपने गीत गबै छै।

हाल-गाल विकराल बनल छै
मुँहगर-कन्हगर बीच पड़ल छै
के केकरा देखतै-सुनतै
हारल-मारल हेराए चलै छै।
अपने ताले...।

२२. पग-पग...

पग-पग उठैत पएर
सत रंग गीत गबैत चलैए।
कखनो आगू कखनो पाछू
उनटि-पुनटि देखैत चलैए
सतरंगी गीत गबैत चलैए।

आगू-पाछूक भेद बिनु बुझने
ससरि-ससरि ससरैत रहैए
जिनगीक शुक्ल-कृष्ण बीच
चीत-पट होइत चलैत रहैए
सतरंग गीत गबैत चलैए।

कखनो विरह कखनो वसंत
भाव-विभोर गबैत चलैए।
वसंतक राग-तान, तानि
वेदना विरह बिखड़ैत चलैए
सतरंग गीत गबैत चलैए।

क्षण-पल जहिना दिन कहाबए
रातिओ-राति रीतियाएल चलैए
कखनो दौड़, कखनो ठमकि
आशा-आश घिसियाइत चलैए
सतरंग गीत गबैत चलैए।

२३. यार यौ...

यार यौ, बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल।
सभ किछु दहा गेल, सभ किछु दहा गेल।

मन दहा भसि-भसिया
लीढ़, केचली कादो समा गेल
यार यौ, बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल।
सभ किछु...।

बाल दहा जुआनी जुड़ि-जुड़ि
चित्त चेतन सेहो हरा गेल
यार यौ, बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल।
सभ किछु...।

एक बाढ़ि धरती पसरि
दोसर अकास चढ़ै छै।
सिर, पएर ठेकान बिनु केने
अपनेमे दुनू लड़ै छै।
अचता मन पचि पचताए
अपनेमे समा गेल।
यार यौ, भजार यौ,
बाढ़िमे सभ किछु हरा गेल।
सभ किछु...।

२४. निरमोही बौआ...

निरमोही बौआ, एना किए रूसल छी।
बाबा-बाबी, बाप-माए कोर
संग-संग संगे खेलैत एलौं
दुनूक बनाओल डोरसँ
जुग-जुगसँ बन्हैत एलौं।
तखन किए, छिटकै छी
एना किए रूसल छी,
निरमोही बौआ...।

बानि छोड़ि कुबानि पकड़ि
वस्तु विन्यास बनबै छी
भ्रमित भ्रम पकड़ि-पकड़ि
भरमि-भरमि भरमै छी
निरमोही बौआ...।

भूल-चूक अपनो होइत अबैए
सोच-अपसोच संग चलैए।
साले-साल गीरह रक्षाक
तखन किए छिटकै छी
निरमोही बौआ...।

२५. अपना गतिए...

अपना गतिए सबहक जिनगी
पग परीक्षा दैत चलै छै।
तीत-मीठ सुआद सिरजि
राति-दिन कहैत चलै छै।
पग-पग परीक्षा दैत चलै छै।
अपना गतिए...।

कखनो मीठ महकि-महकि
बिगड़ि तीत बनए लगै छै।
तहिना तीतो तड़पि-तड़पि
सुआद मीठ दिअ लगै छै।
पग-परीक्षा दैत चलै छै।
अपना गतिए...।

पल-पल, छन-छन छनि-छनि
राति-दिन बनए लगै छै।
शंख संग नाद भरि-भरि
शंखनाद दिअ लगै छै।
पल-पल नाद भरए लगै छै।
पग-परीक्षा दैत चलै छै।
अपना गतिए...।

कौरव-पाण्डव बीच जहिना
शंखनाद कृष्ण करै छै।
काया-माया बीच संसार
लट-पट, हट-सट
करए लगै छै।
पग-पग पएर, धड़ए लगै छै।
पग परीक्षा दैत चलै छै।
अपना गतिए...।

२६. मीत यौ...

मीत यौ, गृहनीक गारि सुनै छी
मीत यौ गृहनीक गप सुनै छी।
गाम-गाम आ गृह-गृहमे
गसल गीरह देखै छी
मीत यौ, अहींटा कहै छी
मीत यौ गृहनीक कथा कहै छी।
मीत यौ...।

गीरहक बीच गृही गुहाएल छै
गूह बीच जुट्टी समाएल छै
देखि-देखि चटिआइ छै,
मीत यौ, देखि-देखि चटिआइ छी
अहींटा कहै छी
मीत यौ...।

गृहपति सभ बनए चाहै छै
नै पाबि घुड़-मौड़ करै छै।
घुड़-मौड़सँ घुरिया घुरै छै
अहींटा कहै छी
मीत यौ...।

गृहनीक गारि सुनै छी
लाजे-धाक मरै छी, मीत यौ
अहींटा कहै छी
मीत यौ गृहनीक गारि सुनै छी
मीत यौ... ।

२७. हे बहिना...

हे बहिना, हे बहिनी
जीवन संग जिनगी बदलै छै।

अपने बदलि किछु, किछु बदलैओ पड़ै छै
किछु अपने सुधरि, किछु सुधरैओ पड़ै छै।
जीवन संग जिनगी बदलै छै।
हे बहिना...।

संगे-संग मिलि खेललौं-धुपलौं
संग-संग रहि संगी कहलौं।
पकड़ि बाँहि बहिना कहेलौं
फूल-प्रीत बनि सासुर बसलौं
हलसि-हलसि मन हँसै छै
जीवन संग जिनगी बदलै छै
हे बहिना...।

एक बहिन ओद्रक कहबै छै
सहस्रो समाज गढ़ै छै।
बहिनासँ दीदी, दीदीसँ दादी
हँसि हँसि मन तड़पै छै।
हे बहिना, हे दिदगर
जीवन संग जिनगी चलै छै।

चलि-चलि रंग बदलै छै
जीवन संग जिनगी बदलै छै।
हे बहिना...।

२८. हे बहिना...

हे बहिना, हे दीदी, हे दादी
सुरति केना बदलतै।
हे बहिना...।

प्रीतिक रीति कुरीत बनल छै
रीति-सुरीति केना पेबै
थाल-खिचार घर-द्वार बनि
कल्प वृक्ष फेल केना पेबै।
हे बहिना हे संगी, हे प्रेमी
सुरति केना बदलतै
हे बहिना...।

जहिना जहर तहिना फुफकरि
नाग, गहुमन डॅसैत रहै छै।
करम-भाग मनतर जपि-जपि
अगुआ-पछुआ धरैत रहै छै।
हे प्रीतिया हे रीतिया
नीक फल कहिया देखेबै
हे नीक फल कहिया देखेबै।
हे बहिना...।

२९. सुक्खक अतृप्त...

सुक्खक अतृप्त धारमे
भसिया गेलै जीवन।
भसि-भसि भसिया गेलै
कानि-कलपि कहैए मन।
सुक्खक...।

कि सोइच सोचै छेलै
पेतै मन मधु आनन
बिना आनने पेत केना
आनन धन ब्रह्मानन
सुक्खक...।

धारक अंतिम धड़ धरिया
धड़ि धैड़ चलतै जीवन।
बून पानि धार सगर
पाबि केना पेतै जन?
पाबि केना पेतै जन?
सुक्खक...।

३०. नढ़ड़ा हेल...

नढ़ड़ा हेल हेलै छै, भाय यौ
नढ़ड़ा हेल हेलै छै।
ठकि-ठकि, फुसिया-पनिया
जिनगी संग खेलै छै, भाय यौ
जिनगी संग खेलै छै।
नढ़ड़ा हेल...।

जुग छेलै जमाना छेलै
कलपि कूश लागै छेलै
सोझ-साझ फुलकि-फलकि
चालि खिखिर धेने छेलै।
चालि खिखिर धेने छेलै।
नढ़ड़ा हेल...।

सुख स्मृति मन पाड़ि-पाड़ि
नढ़ड़ा खेल खेलै छेलै।
जहिना नढ़ड़ा गाछ-विरीछ
तहिना मन पेबै छेलै।
तहिना मन पेबै छेलै।
नढ़ड़ा हेल...।

नढ़ड़ा जहिना गाछ उगै छै
भकराड़ चालि पकड़ि चलै छै।

फड़-फूल बिनु रूप गढ़ि-गढ़ि
नढ़ड़ा फल देखबैत रहै छै।
नढ़ड़ा फल देखबैत रहै छै।
नढ़ड़ा हेल...।

नढ़ड़ा खेल खेलैत रहै छै।
भाय यौ, नढ़ड़ा हेल हेलैत रहै छै।
नढ़ड़ा हेल...।

३१. अहीं कहू...

अहीं कहू भाय आब की करबै?
पएर पसारब तखने
मन समेटब जखने
शिव दर्शन कैलाशक ऊपर
भट्ठा नहि सीरापर।
तहन जे धारक लहरिमे हेलबै
अहीं कहू...?

दहिना हाथक गति बमा अछि
आगू चलि कऽ देखियौ
मुदा, पाछूओ भेने बाट नै छोड़त
की प्रकृति प्रदूषण करबै?
की प्रकृति प्रदूषण करबै?
अहीं कहू...?

नमहर-नमहर पर्चा-पोस्टर
बाँटि-बाँटि भरमेबै,
बिर्ड़ो, दानो, ठनकाक दुर्गकेँ
जेरक-जेर केना कऽ टपबै?
जेरक-जेर केना कऽ टपबै?
अहीं कहू...?

नमगर-चौरगर बात बना
ठकि-ठकि फुसिएबै।
सुखले आँखिक नोर निड़ा
राति दिन घटिएबै।
राति-दिन घटिएबै।
अहीं कहू...?

३२. चलू उचितपुर...

चलू उचितपुर देस
यौ-भैया चलू उचितपुर देस।

नै अछि भेदभाव ओतए किछु,
नै अछि चोर-बैमान।
नै अछि ऊँच-नीच किरदानी
सबहक एक्के भेष यौ भैया
सबहक एक्के भेष।
चलू उचितपुर...।

सबहक चालि-ढालि एक्के
अछि सबहक मान-समान
मन-मनुख बनि-बनि सभ
भरैए सूर-तान, यौ भैया
भरैए सूर-तान
जेहन देस तेहन भेष
चलू उचितपुर...।

आगि-पानिक भेद कोनो नै,
सबहक एक्के देस।
पढ़ै-लिखैक एक्के रस्ता अछि,
सबहक एक्के उदेस।

चलू उचितपुर...।

जिनगीक तँ एक्के विचार अछि
नै अछि देस-विदेस।
माए-बहिन सबहक एक्के छी,
बाल-बच्चा सभ एक।
चलू उचितपुर...।

एक्के खाहिंस सभकेँ होइ छै
ने कम ने बिसेस।
यौ-भैया चलू उचितपुर देस।
चलू उचितपुर...।

३३. कानि कलपि...

कानि कलपि कते कहब
गामेमे हराएल छी
रंग-बिरंग अन्न-पानि
नीकसँ छिड़ियाएल छी।
नीकसँ छिड़ियाएल छी।
कानि-कलपि...।

समटेनौं तँ ने समटाइए
थाकि कऽ ठकुआएल छी
डरे आँखिओ ने उठैए
कातेमे नुकाएल छी।
भाय यौ, कातेमे नुकाएल छै।
गामे...।

जइ आशा ले जीबै छी
तइपर पानि फेराएल छै
तैयो आशक डोर पकड़ि
पाछू-पाछू घिसियाएल छी।
पाछू-पाछू घिसियाएल छी।
कानि-कलपि...।

३४. बुधिये बाट...

बुधिये बाट बौएलौं हे बहिना
बुधिये बाट बौरेलौं हे।
बुधिये...।

आड़ि-धूर छेकने छै धरती
नै छेकने अकास हे
उड़िते उड़ि ओतए उड़ि गेलौं
कहाँ भेटए रणवास हे।
कहाँ भेटए रणवास हे।
बुधिये बाट बौएलौं हे बहिना
बुधिये...।

देस-दुनियाँक रंग-रूप देखि
अपनो रूप निखारितौं हे
अगम-अथाह पड़ल हे बहिना
जिबैक नै विश्वास हे
बुधिये बाट बौएलौं हे बहिना
बुधिये...।

३५. जुग-जुग...

जुग-जुग आस लगौने मइए
शीत-रौद चटैत एलौं
लुप्त भेल नयन-ज्योति हे मइए
रेगहा टा जपैत एलौं।
रेगहा टा जपैत एलौं।
जुग-जुग...।

गंगाजलिसँ नीर बोझि
सिक्त करब दसो दुआरि।
आंगन-घरक संग-संग
नीपब गोसौनिक चौपाड़ि।
हे मइए...।

हँसैत, गबैत, नचैत, भसैत
पहुँचब तोर दुआर
मुदा फँसि मकड़जालमे
बन्न भेल सब केबाड़।
हे मइए...।

दसो दिशा अछि घेराएल
अकास बहैत देखै छी
मुदा ससरि गेल भूमा
कानि-कानि गाबि कहै छी।
हे मइए...।

(श्री राजनन्दन लाल दासक अठहतरीम जन्म दिनपर...)

३६. घात लगौने...

घात लगौने घात लगल छै
फल करनी अवघात मढ़ल छै
घात लगौने घात लगल छै
करनी फल अवघात मढल छै।
घात लगौने घात लगल छै
फल...।

तिनकमिया बंशी बनि-बनि
पानि बीच घतिया पड़ल छै।
गंध बोर सुगंध कहि-कहि
मुँह मध्य अवघात करै छै।
घात लगौने घात लगल छै।
फल...।

बिनु अवघाते होइत रहै छै
गलफड़ घात लगैत रहै छै।
ही-जी छिछिया-छिनिया
उनटि-सुनटि सुनगैत रहै छै।
घात लगौने घात लगल छै।
फल...।

३७. देहमे नमहर...

देहमे नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूर वएह कूदि टपै छै।
टपि टपान हाथो कहैत
राही राह पकड़ि चलै छै।
देहमे नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूर...।

टाँग जेकर हाथी सदृश
बालु ऊँट कहाँ बुझै छै
चालि सुचालि पकड़ि-पएर
रच्छा अपन करैत रहै छै।
देहमे नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूर...।

मुसुक मन मारि मुस्की
मने-मन मुसकान भरै छै।
हहा-हहा हषविष अबैत
कूदि-फानि कहैत रहै छै।
देहमे नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूर...।

करसँ कमल पकड़ि
जलधर बीच कहै छै।
ने लत्ती ने विरीछ बनि
गछिया गाछ गछै छी।
मीत यौ, गछिया गाछ गछै छी।
देहमे नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूर...।

३८. जिनगीमे जे...

जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह कहबैत रहैए।
संग ससरि, घुसकि-पुसकि
प्रेमी मित्र कहबैत रहैए।
जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह...।

मित्र बनि मैत्रेयी पकड़ि
जिनगीक झूल झूलैत रहैए
लेख-जोख कर्मक करैत
गुण गुण मन गुणैत रहैए।
जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह...।

संगी, प्रेमी दोस्त भजार
बैसि बाट बतियाइत रहैए।
संग-कुसंग, कुसंग-संग
नीड़ नोर निनियाइत रहैए।
जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह...।

संग ससरि घुसकि-पुसकि
प्रेमी मित्र कहबैत रहैए।
जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह...।

३९. हे बहिना केना...

हे बहिना केना कऽ जेबै ओइ घरबा
थुक फेकि जइ घर निकललौं
केना जेबै ओइ दुअरबा हे बहिना
केना कऽ जेबै ओइ घरबा
थुक फेकि...।

जनि-जनि बीआ वाणी-बानि
लतरै-चतरै छै फुलबतबा
सुबास-कुबास बनि-बनि
सभ किछु देलिऐ गमबा
हे बहिना केना कऽ जेबै ओइ घरबा
थुक फेकि...।

पुरुखपात रहलै ने एक्को
करतै के बगबटबा
घरहरिया एको ने बँचलै
बन्हतै के घरमरबा
हे बहिना केना कऽ जेबै ओइ घरबा।
थुक फेकि...।

मिथिला कहि मिथि मिथिला
बँचलै ने एको घरहरबा

कखनो घरहर छुतहर बनि
छुतहरो कहै छै घरहरबा।
हे बहिना केना कऽ जेबै ओइ घरबा।

४०. हे आशुतोष...

हे आशुतोष भगवान अहाँ,
हमर कखन दुख मेटब
हे आशुतोष...।

बहति-बहति अश्रुभूमि सूखि गेल
कि लए आरती उतारब।
कनैत-कनैत कनमुँह मौला गेल
सुआगत कि लए करब?
हे आशुतोष...।

सभ दिन दुखक तर दबेलौं
सुखक सुख कहियो ने पेलौं।
चुहटि हृदए तोष पकड़ि
मनुखक गति कहियो ने पेलौं।
हे आशुतोष...।

सुसुकि-सुसुकि हृदए हमर
बेथा अपन सुनबैए।
अन्तो अन्त उतारि आरती
सिहरि-सिहरि सुनबैए।
हे आशुतोष...।

धीर होइत धीरज मेटा गेल
थीर होइत विवेक थकुचा गेल।
झड़कि-झड़कि ज्ञान झड़कि
पड़ले-पड़ल सभ सड़ि गेल।
हे आशुतोष...।

४१. मनक फूल...

मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे फूल फुलाइत रहै छै
भोरहरबे वसन्त जहिना
मेघ ललौन बनैत चलै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे...।

पकड़ि उमा सिरजि लाली
राग वसन्त गबैत चलै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे...।

रीत-सुरीत फूल-फुलकि-फलकि
फूल-फल मिलबैत चलै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे...।

जोड़ि-जाड़ि मसुआ-छिड़िया
बरहमसिया कहबैत चलै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे...।

मार टॉहि अलप-अलपि
बारहो मास चलैत रहै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे...।

४२. फूल मनक...

फूल मनक फुलाइ केहेन छै
मनमे फूल फुलाइ केहेन छै।
जेहेन जेकर मन रहै छै
तेहेन मन फूल धड़ै छै।
फूल मनक...।

जेहेन जेकर फूल सजै छै
तेहेन तेकर फुलवाड़ी लगै छै।
फूल मनक...।

फूलोक तँ भिन-भिन किरदानी
तीत-मीठ बिखड़ैत रहै छै।
तीतमिट्ठी बनि-बनि बिलहि
खून-पानि मिलबैत चलै छै।
फूल मनक...।

४३. बेकाल-काल...

बेकाल-काल कुहुकैत रहै छै
समसमाइत घुसुकैत रहै छै।
समसमाइत घुसुकैत रहै छै।
जेहन जेकर फूल रहै छै
कोढ़ी-वाती तेहने बनै छै।
बेकाल-काल कुहुकैत रहै छै।
समसमाइत...।

कोढ़िक कोढ़िपना नहि-नहि
रूपक रूपगामिनी रहै छै।
ससरि-सड़कि बदलि रूप
फूल बाती बनबए लगै छै।
बेकाल-काल कुहुकैत रहै छै।
समसमाइत...।

कालोक कि कम अछि किरदानी
अकाल-सकाल बनबैत रहै छै।
सूति-जागि सभ चलि-चलि
गाल-काल बनबैत रहै छै।
गाल-काल बनबैत रहै छै।
बेकाल-काल कुहुकैत रहै छै।
समसमाइत...।

४४. जेहन जेकर...

जेहेन जेकर बगए रहै छै
तेहेन तेकर वाणि चलै छै।
जेहेन जेकर बाइन चलै छै
तेहेन तेकर बौस बनै छै।
जेहेन जेकर वगए रहै छै
तेहेन तेकर बाइन चलै छै।

एक बाइन बाँसक चलै छै
दोसर व्यौंत-बेति-बेति होइ छै।
तेसर सिक्की सिक चढ़ै छै।
डाला-डाल सुसकारी भरै छै।
जेहेन जेकर वगए रहै छै।
तेहेन तेकर बाइन चलै छै।

कखनो बानि उबानि चलि-चलि
कुबानि-सुबानि कहबैत चलै छै।
जेहेन जेकर वगए रहै छै
तेहेन तेकर बाइन चलै छै।
तेहेन तेकर बाइन चलै छै।

४५. समए-साल...

समए-साल सुसकारि चलै छै
समसमाइत-घमघमाइत रहै छै।
जेहन जेकर फूल रहै छै
कोढ़ी-वाती एक करै छै
समए-साल...।

कोढ़िक कोढ़िपना नहि-नहि
रूपक रूपगामिनी छै।
कोढ़ीक संग पकड़ि-पकड़ि
वाती-फूल सिरजैत चलै छै।
समए-साल...।

सालोक कि कम शैतानी
सुसमए-कुसमए बनबए लगै छै
जगता जोर पकड़ि-पकड़ि
गजगामिनी रूप धड़ए लगै छै।
गजगामिनी बनि चलए लगै छै।
समए-साल...।

४६. संग मान-समान...

संग मान-समान चलै छै
मीत यौ, मानिक संग सम्मान चलै छै।
असगर जहिना फूसि वृहस्पति
मानो तहिना घटै-बढ़ै छै
एक नमरी दू नमरी बनि-बनि
किरदानी सभ करैत रहै छै।
किरदानी सभ करैत रहै छै।
मीत यौ...।

अमान-मान बनि-बिगड़ि
कुमान खेल खेलैत रहै छै
छीन-झपटि सुमन श्रृंग
रीत श्रृंगार सजैत रहै छै।
रीत श्रृंगार सजैत रहै छै।
मीत यौ...।

जुग-जुगसँ ससरि-पसरि
अगो सिर चढ़ैत रहै छै।
जोग-अजोग कहि-सुनि
दुंदुभि बजबैत रहै छै।
दुंदुभि बजबैत रहै छै।
मीत यौ...।

४७. जेहने शक्तिक...

जेहने शक्तिक रंग रहै छै,
पकिया रंग तेहने धड़ै छै।
जेहने...।

जेहन पकिया रंग रहै छै,
देव सिर तेहने चढ़ै छै।
जेहने शक्तिक रंग रहै छै,
पकिया रंग तेहने चढ़ै छै।

दुनियाँक भँवर जाल बीच,
मित्र-इष्ट बिड़ले भेटै छै
अशिष्ट, इष्ट, जालमे
सोझर ओझर होइत चलै छै
जेहने शक्तिक रंग रहै छै
लीलाक तेहने दृश्य बनै छै।
लीलाक...।

४८. खेल खेलौना...

खेल खेलौना खेल खेलै छी
मने-मन बपहारि कटै छी।

खेल खेलौना खेल खेलै छी।
एक खेलौना छी मन रंजन
दोसर जीवन धार बहाबए
कदम डारि झुलि झूला
जमुना धार महार कहाबए।
खेल खेलौंना...।

नै हँसि कानि नै पाबि
मन-मरदन करैत रहै छी
खेल खेलौना खेल देखै छी
मने-मन बपहारि कटै छी।

४९. प्रेमी पिया...

प्रेमी पिया, हे प्रेमी पिया
पीरितिया जोगा-जोगा, हृदए रखियौ जीया
हे यौ प्रेमी पिया...।

तड़सि-तड़सि मन तड़पि रहल अछि
आस लगा बाट खोजि रहल अछि
नजरि उठा आबो कनी, तकियौ हिया
हे यौ प्रेमी पिया...।

चीन्ह पहचीन्ह सब उड़िया गेल
हवा झोंक पाबि सब छिड़िया गेल
आबो कनी नजरि उठा, दिअ हमरो जिया
हे यौ प्रेमी पिया...।

सभ दिन संगे मिलि दुनू रहलौं,
सुख-दुख सेहो संगे मिलि कटलौं।
छाती खोलि सहेजि-सहेजि,
दिल दिलेरि धरू जिया
हे यौ प्रेमी पिया...।

५०. बिसरि गेल...

बिसरि गेल मन तोरा
हे बहिना बिसरि गेल मन तोरा
जहिना गाछक फूल झड़ै छै
झाड़ि-झाड़ि खसलह तोरा
हे बहिना, बिसरि गेल मन तोरा।

रहि-रहि सुमारक अबै छै
देखैले हृदए तड़सै छै
मारि-सम्हारि गबै छह तोरा
हे बहिना, बिसरि गेल मन तोरा।

खोद-बेद सदि करैत रहै छै
तोरा-पाछू घुमैत रहै छै।
लपकि-झपकि पाबए चाहै छै
झपटि पकड़ि बाँहि तोरा
हे बहिना, बिसरि गेल मन तोरा।

कोसी-कमला दूर भगौलक
नैहर-सासुर सेहो बिसरौलक।
हहरि-हहरि हृदए सहटि
छाती सटबए चाहैए तोरा
हे बहिना...।

५१. आबो कनी...

आबो कनी विचारू
भाय यौ, आबो कनी विचारू।
भूखे भगलौं, सभ जनैए
दुखे भगलौं, सभ जनैए।
भरल पेट विचारू,
आबो कनी विचारू
भाय यौ...।

जहिया जे भेल, से तहिया भेल
भूत गेल, भूतकालो गेल।
बीर्तमानक कथा-बेथा संग
भवितव्य भविष्यक विचारू
आबो कनी विचारू
भाय यौ...।

कमा-खटा कऽ दुख मेटेलौं
भूख-पियास सेहो, भगेलौं।
संग विवेक बुधि विचारू
भाय यौ, आबो कने विचारू।
भाय यौ...।